BUNIYAAD NEWSLETTER

Vol.1 March 2010

Department of Elementary Education

Miranda House

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये **बुनियाद** हिलनी चाहिए.....

Globalization projects an image of the world where boundaries are disappearing, a world where communication, connection and competition can come from anywhere. It means increased integration of economies and societies around the world, transcending the boundaries of the nations, flow of capital, ideas, people, culture, technology and much more. Since we are living in a globalized world, it becomes essential, especially for the youth to understand the meaning of globalization and its influence on various aspects of our lives. Therefore, The Department of Elementary Education organized a series of workshops on issues related to Globalization such as Education, Culture, Gender etc.

Globalization: An Introduction

In the introductory session, **Professor Sunanda Sen,** spoke about the various aspects of globalization.

She said that each and every individual is connected to the world. With integration of global economies, market has been opened up, goods and commodities can be imported or exported without problems. The market is shaping patterns of consumption. The control of the state over the market as well as import and export has been reduced. Channels of communication have increased with faster and easy spread of internet. All developing countries have opened their markets to globalizations that has resulted in the free flow of goods, technology and people. She continued by saying that only a few countries will be able to produce efficiently and many will get eliminated in the process which will lead to monopoly of a few. This process will not absorb all manufacturers and workers. She argued that with the availability of imported technologies, fewer people are required to do the same job. In agricultural sector, only the richer farmers can afford the new technology. She pointed out that this creates a division between elite and marginalized, and also between different strata of the society.

भूमंडलीकरण और पर्यावरण

यूँ तो भूमंडलीकरण के संबंध में जब बात की जाती है तो इसे विशेष परिप्रेक्ष्य में ही देखा जाता है और वह विशेष परिप्रेक्ष्य है आर्थिक भूमंडलीकरण! हालाँकि भूमंडलीकरण का दौर जब शुरू हुआ तो लोग इससे अभिभूत हो गए और हर तरफ़ भूमंडलीकरण की बयार चल पड़ी।

हर कोई चाहता था कि बहती गंगा में हाथ धो लिया जाए और दुनिया को अपनी मुट्ठी में कर लिया जाए परंतु जिस प्रकार प्रत्येक तत्व की अति सही नहीं होती उसी तरह भूमंडलीकरण के दौर के दौरान ही बड़े-बड़े विद्वानों, दार्शनिकों और ने भूमंडलीकरण की परतों पर विचार विमर्श किया और अब तक जो भूमंडलीकरण हमें केवल मनोहर स्वप्न लोक की तरह लग रहा था उसका एक नया ही पक्ष हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। इन विद्वानों के विचार विमर्श से ही यह पता चल सका कि भूमंडलीकरण समाज के हर पक्ष पर अपनी पकड़ बना रहा है जो सही नहीं है। हाल ही के वर्षों में इस बात पर बहुत बहस हुई, बहुत काम हुए कि आखिर भूमंडलीकरण क्या बला है? क्या यह केवल आर्थिक संदर्भों से ही जुड़ा है या इसके अन्य पक्ष भी है?और क्या यह केवल अच्छा ही अच्छा है या बहुत से ऐसे पक्ष भी है जहाँ हमें यह बुरी तरह प्रभावित कर रहा है?यही कुछ ऐसे पक्ष थे जिन्हें मानस में रखते हुए और युवा पीढ़ी को दूरगामी सच से अवगत कराने के लिए वैश्वीकरण पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला को आयोजित किया गया जिसमें वैश्वीकरण के विभिन्न पक्षों से संबंध व उन पर प्रभाव को परिलक्षित करने की एक सफल कोशिश की गई।

इसी श्रृंखला के तहत चौथा-विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया वैश्वीकरण व पर्यावरण को लेकर और इसके लिए आमंत्रित किया गया जाने माने पर्यावरणविद् एवं शिक्षाविद् डॉ॰ विनोद रैना को।

डॉ॰ रैना शिक्षा व पर्यावरण जगत में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे एकलव्य संस्था से जुड़े और बतौर सह संस्थापक कार्य किया। उनकी सबसे अहम भूमिका रही होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में। 1984 में जब भोपाल गैस त्रासदी हुई तब वे भी इस पर्यावरणीय क्षति के खिलाफ़ आंदोलन में शामिल थे। हाल ही के वर्षों में उन्होंने पर्यावरणीय क्षति की एक नई धारणा पर कार्य किया, जिसे इकॉलॉजिकल डेब्ट के नाम से जाना जाता है। उन्होंने भूमंडलीकरण व पर्यावरण पर व्याख्यान देते हुए छात्राओं को इसी संकल्पना से अवगत कराया और बताया कि पर्यावरण व सरकार के बीच एक फासला रहा है; सरकार विकास चाहती है जबकि वास्तविकता यह है कि पर्यावरणीय क्षति अंततः विकास की क्षति है। पर्यावरण सुरक्षित, तो ही विकास सुनिश्चित, अन्यथा विकास का कोई वजूद नहीं है।

डॉ॰ विनोद रैना ने व्याख्यान की शुरुआत इस तथ्य से की कि भारत में भूमंडलीकरण बहुत

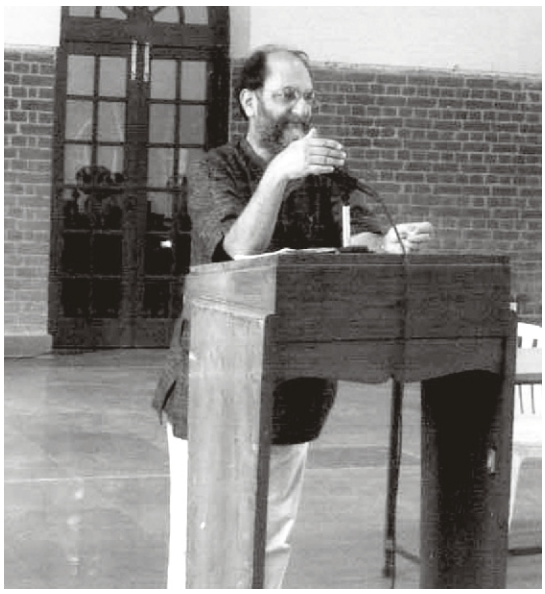

पुराना नहीं है बल्कि नया है। 1991 में भूमंडलीकरण के इस मनोहर स्वप्न ने भारत को भी अपने मोहपाश में बाँध लिया और यह तब हुआ जब नई आर्थिक नीति आई और भारत ने खुले हाथ से उदारीकरण के लिए अपने दरवाज़े खोल दिए। हालाँकि संसार में भूमंडलीकरण लगभग 1492 में शुरू हो चुका था जब कोलंबस लैटिन अमरीका पहुँच चुके थे। परंतु द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जब यूरोप के अपने प्राकृतिक स्त्रोत समाप्त होने लगे तब यूरोप ने एक मार्शल प्लान के तहत अन्य देशों से स्त्रोतों को प्राप्त किया और यही औद्योगीकरण आधार साम्राज्यवाद का रूप अख़्तियार कर गया। और भूमंडलीकरण और साम्राज्यवाद पूरक बन गए।

उन्होंने बताया कि 1700 ई॰ में विकास दर स्तर पर बराबरी को दिखाई देती है, 1820 में कुछ बदलाव होते है और 1992 में अप्रत्याशित बदलाव नज़र आते हैं। यह सारा खेल भूमंडलीकरण का है जिसमें अंततः यूरोप द्वारा सर्वाधिक विकास को ज़ब्त किया गया। इसके पश्चात वे एक और पक्ष की ओर मुड़े जिसमें उन्होंने इकॉलॉजिकल डेब्ट व इकॉलॉजिकल फुटप्रिंट की बात की जिसके तहत उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का पर्यावरण में अस्तित्व बनाए रखने का बराबर का हिस्सा है। साथ ही उन्होंने बताया कि संतुलन के लिहाज़ से प्रत्येक व्यक्ति को पृथ्वी के संसाधनों का 1.8 ग्लोबल हैक्टेयर भाग मिलना चाहिए परंतु अमरीका में यह 5.2 ग्लोबर हेक्टेयर प्रति व्यक्ति है जबकि भारत में यही 0.8 ग्लोबल हैक्टेयर प्रति व्यक्ति है जो बांग्लादेश में 0.2 ग्लोबल हेक्टेयर प्रति व्यक्ति है जो कि प्रतिकूल है।

इसके पश्चात उन्होंने हमें इस तथ्य से अवगत कराया कि कार्बन पर्यावरण को बड़े पैमाने पर क्षति पहुँचा रहा है। इस संबंध में बताया गया कि प्रतिवर्ष 1 भारतीय 1 टन कार्बन उत्सर्जित करता है। उसकी तुलना में 1 अमरिकी नागरिक 20 गुना अधिक कार्बन उत्सर्जित करता है। उन्होंने आगे बताया कि प्लास्टिक प्रयोग के दुष्प्रभावों को जानते हुए भी अभी तक भारत में इसके प्रयोग को बंद नहीं किया जा सकता क्योकि इसके पीछे आर्थिक कारण है, कि उद्योगपति नहीं चाहते कि वे अपने उत्पादों को बंद करें इस कारण से नदियों को प्रदूषित होने से रोका नहीं जा सका है। क्योंकि प्रदूषित होने से बचाने वाले इंतज़ाम महंगे है। हमें पर्यावरणीय समस्या को आर्थिक-सामाजिक समस्या की तरह देखना होगा क्योंकि वनों की कटाई हमारे अंत की ओर बढ़ता चरण है। वनों की कटाई भी एक प्रकार का आर्थिक कारण है।

अंत में उन्होंने बताया कि भूमंडलीकरण को मनोहर स्वप्न समझने वालों को चेतने की ज़रूरत है अन्यथा नकारात्मक परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहे, साथ ही हम जो पिछले कई वर्षों से आर्थिक भूमंडलीकरण पर केन्द्रित रहे हैं। अब हमे अपने ध्यान को पर्यावरण पर भी केन्द्रित करने की ज़रूरत है। वैश्विक पर्यावरणीय तंत्र में वैश्विक पर्यावरणीय न्याय की ज़रूरत सर्वाधिक है। भूमंडलीकरण के साथ न्याय की जरूरत

सर्वाधिक है।

यहीं व्याख्यान की समाप्ति हुई और छात्राओं के साथ चर्चा व विचारों के आदान-प्रदान की शुरूआत हुई। चर्चा के तहत छात्राओं ने अधिकतर पर्यावरण से जुड़े प्रश्न पूछे।

एक प्रश्न था कि क्या न्यूक्लियर ऊर्जा प्रदूषण नहीं फैलाती? डॉ॰ रैना की प्रतिक्रिया थी कि न्यूक्लियर ऊर्जा शुद्ध नहीं है क्योंकि यह भी कार्बन छोड़ती है। जबकि हवा, सूर्य अर्थात प्राकृतिक स्त्रोतों से मिलने वाली ऊर्जा शुद्ध है और जरूरत इस बात की है कि हम इन अनंतकाल तक चलने वाले स्त्रोतों की ऊर्जा का उपयोग करे।

इसके पश्चात एक अन्य छात्रा ने प्रश्न पूछा कि जलवायु परिवर्तन पर सरकार ने कौन-कौन से कदम उठाए है?डॉ॰ रैना इस विषय पर बोले कि सरकार ने इस संबंध में बहुत से कदम उठाए है परंतु बड़े स्तर पर ये बहुत कारगर नहीं रहे क्योंकि कहीं न कहीं सत्तासीन सरकारों का नज़रिया अपन फ़ायदा ढूंढने में ही रहता है।

एक अन्य प्रश्न में पूछा गया कि कौन-कौन से देश कार्बन के उत्सर्जन को कम करने के विषय में विचार कर रहे है?इस संबंध में डॉ॰ रैना ने कहा कि जापान में इस विषय पर काफ़ी विचार विमर्श चल रहा है परंतु अमरीका जैसे देशों का कहना है कि भारत और चीन की जनसंख्या की अधिकता कार्बन के उत्सर्जन का बड़ा कारण है और इस विषय में इन देशों को सोचने की जरूरत अन्यों से कही अधिक हैं विकसित देशों की इसी विचार धारणा का विकासशील देशों को शिकार होना पड़ता है। अंत में यही है कि डायबिटीज के रोगी हेतू जिस प्रकार चीनी हानिकारक होती है उसी प्रकार पृथ्वी के लिए कार्बन का उत्सर्जन हानिकारक है। जब तक इसके लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाएगे तब तक पर्यावरणीय क्षति को संतुलित व अनुकूलित करने का कोई हल नहीं निकल सकता।

डॉ॰ रैना और छात्राओं के बीच इस चर्चा ने छात्राओं के मानस में एक नई सोच को प्रशस्त किया और भूमंडलीकरण से जुड़े नए सवालों को कौंधाया।

वैश्वीकरण और यौनिकता

भूमंडलीकरण पर कार्यक्रमों की कड़ी में 16 सितम्बर 2009 को **सुश्री कल्याणी मेनन** ने 'वैश्वीकरण और यौनिकता' पर एक कार्यशाला संचालित की। कल्याणी मेनन एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने 'जागोरी' नामक संस्था से जुड़कर स्त्री मुक्ति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

कार्यशाला में चर्चा का केन्द्र भूमंडलीकरण के लाभ व हानि का मुद्दा था। हालांकि एक और वैश्वीकरण कृषि, अन्य व्यवसाय, सकल घरेलू उत्पादन के क्षेत्र में परिवर्तन लाया वहीं दूसरी और घर और क्षेत्रीय बाज़ार भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, बेहतर मूलभूत संरचना, उपभोक्ता के लिए उपलब्ध अधिक विकल्प आदि की दिशा में भूमंडलीकरण का

प्रभाव सकारात्मक रहा है, पर इसका प्रतिकूल प्रभाव मूल्य अस्थिरता, प्रतिस्पर्धा और अधिक असमानता के रूप में दिखाई पड़ता है। इस पृष्ठभूमि की प्रस्तुति के बाद वक्ता ने यह विश्लेषण किया कि कैसे महिलाएँ वैश्वीकरण से प्रभावित हो रही हैं। वैश्वीकरण ने केवल व्यापारिक संबंधों व बाज़ार वृद्धि को ही नहीं बढ़ाया बल्कि शैक्षिक व रोज़गार के अवसर भी उपलब्ध कराए हैं। बड़े शहरों और कस्बों में महिलाओं को इसका लाभ मिलता है। हालांकि वे महिलाएँ जो कि समाज के निम्नस्तर से संबंध रखती हैं उन्हे वैश्वीकरण के हानिकारक प्रभाव जूझना पड़ा। वैश्वीकरण ने भले ही कुछ महिलाओं की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन किया हो लेकिन उन महिलाओं के परिवारिक स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसका परिणाम कामकाजी महिलाओं की दुविधा के रूप में सामने आया जिन्हें घर के अंदर व बाहर विभिन्न तरह की भूमिका निभानी पड़ती है। धर्म भी पुरूष प्रधानता के चलते महिलाओं को दबाने, कुचलने का ज़रिया बन गया है। पितृसत्ता, धर्म और भूमंडलीकरण के बीच संबंध उजागर करते हुए कल्याणी जी ने इसे त्रिभुज के कोनों के रूप में दिखाया और बताया कि कैसे ये एक दूसरे का पोषण करते हैं।

Globalization and Culture

In his talk on *Globalization and Culture*,

Shri Ravikant deliberated on the difference in meaning of globalization, as interpreted in earlier times and at present. This difference is found majorly in the meaning of globalisation with respect to media, technology, literature and above all our culture and society. A question raised here was whether originality is at stake due to globalization or not? The answer for this was sought out with examples drawn from literary writings, song melodies, public speeches, etc. He concluded that changes in original form are so much so that we are unable to distinguish the original from the revised form. But we should make an effort to evolve these changes in a positive manner, not forgetting the real identity and developing with globalization while keeping the original essence intact.

Globalization and Identity

A film *Oye Lucky Lucky Oye* was screened in the department followed by a discussion

on Globalization and Identity issues by **Prof. Apoorvanand.** He said that “Oye Lucky Lucky Oye” is a movie based on the protagonist 'Lucky' who is a thief. He steals all the materialistic luxuries which he may require at his place. He is a very different kind of thief. He does not have any intention of stealing money. Lucky does not have a fixed identity. His identity keeps on changing and his life is always on the run. According to Prof. Apoorvanand, our identity is constantly changing with situations in social context as we take up different social roles. Lucky in order to survive in this competitive world keeps on moving from one identity to another in order to acquire everything that is valued by the world. The discussion thus, brought about an underlined fact that “Identity is never fixed and to achieve the standards set by the world we keep running from one identity to another”.

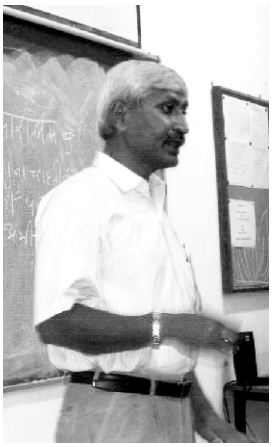

Globalization as We Understand it:

Paper presentation

In the Department Festival, '*Buniyaad*' held on December 3rd, paper presentation on the theme '**Globalization as we understand it'** was organized in which students of Department of Elementary Education from Miranda House as well as other colleges participated and presented their papers. It provided a forum to critically examine the contexts and issues of globalization, and aimed to initiate a productive dialogue between the students.

Surbhi Nagpal(Miranda House), presented a paper on the *Origin of Globalizaton*. She said that the origin of globalization is viewed differently by different people. Some believe that it has been in existence since the rise of trade links between Sumer and Indus valley civilization. It was not until 1960s that globalization became a worldwide phenomenon. First phase of what we call as modern globalization, began to break down at the beginning of the 20th century with First World War. However, it grew with time and today nothing is immune from its impact. She also spoke about the impact of globalization on society, culture, economy and politics. The cultural influence of globalization is most prominent and persistent. It is no longer a matter of surprise that someone in America is found eating Indian thali for lunch or wearing salwar kameez. However, globalization has different impacts on different people. It is boon for some and a bane for others. It is both a source of repression and a catalyst for progress and development. However, development at the cost of impoverishment of some is unjust.

अनामिका (मिरांडा हाउस) ने अपनी प्रस्तुति में अपने विचारों को कुछ इस तरह रखा कि भारत के संदर्भ में भूमंडलीकरण का प्रभाव सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषा और अर्थव्यवस्था आदि पहलुओं पर भी देखा जा सकता है। इसने एक इंसान के सामाजिक सिद्धांतों, सोचने के तरीकों तथा ओढ़ने पहनने के तरीकों को प्रभावित किया है। अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सन् 1990 के बाद भारत में पूंजी का अंतः प्रवाह और GDP में इज़ाफ़ा देखने को मिला। एक तरफ इसका अत्यधिक लाभ पहुँचा है परन्तु समाज के एक छोटे हिस्से को ही तवज्जो दी। भूमंडलीकरण को पूरी तरह से उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए ज़रूरी है

कि इसका फ़ायदा समाज के कोने-कोने तक फैले। तभी भूमंडलीकरण को सही मायनों में फायदेमंद कहा जा सकता है। (अनामिका, बी॰ एल॰ एड, द्वितीय वर्ष)

Tejasvini (Miranda House) spoke on the topic of globalization and what she understood by the term. 'Common man' on the streets of India hardly understands the discourse on WTO and trade. Yet we can feel the impact of globalization in several direct ways; increased petrol prices, global brandings in shopping malls, mobile phone connectivity, broad band, induced knowledge, and demands created on high quality farm products and so on. However, there has been little development in the fields of education and health. If at all there is a development, the motive is profit and not social welfare. For a 'common man', access to these basic facilities has become difficult and burdensome. Hence, there is a need for the government to think about the 'common man' and to open the doors of Globalization to health and education sector. Even if we earn lot of profits and foreign currency by globalization, yet we cannot forget the place of a 'common man'. Their standard of living may have improved but there is an unequal distribution of wealth, which has led to the rich man getting richer and the poor man becoming poorer. It is the 'common man' who has suffered the most by globalization.

भारती (अदिति महाविद्यालय) ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि यह एक स्वीकार्य तथ्य है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों की उपलब्धता के बिना मानव जाति का विकास संभव नहीं था परंतु यह भी कड़वा सच है कि मनुष्य ने धरती पर अपने बारह हज़ार साल के अस्तित्व काल में अमानवीय रूप से पर्यावरण से मिलने वाले संसाधनों को लूटा है। मानव ने प्राकृतिक संसाधनों पर अपने एकछत्र स्वामित्व के ज़रिए अन्य प्रजातियों के अस्तित्व को संघर्षमय बना दिया है।

अब हमारे भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए वैश्विक समाज के प्रतिनिधि एक साथ आ गए है। भूमंडलीकरण का उद्देश्य अब धारणीय विकास की ओर केन्द्रित हो गया है। धारणीय विकास नामक शब्दावली का प्रयोग सर्वप्रथम ब्रन्डटलैण्ड आयोग द्वारा किया गया था। मनुष्य की आवश्यकताओं ने प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग किया है। मनुष्य ने जैविक तंत्र का नाश किया हैं इसका उदाहरण इस रूप में देखा जा सकता है कि प्रोटीन की माँग को पूरा करने के लिए लोगों ने मछलियों की प्रजाति को नुकसान पहुँचाया है जिसके फलस्वरूप मत्स्य पालन में लगातार गिरावट आ गई है। कृषि योग्य भूमि पर लगातार अत्यधिक चराई के कारण भूमि बंजर होती जा रही है। औद्योगीकरण व तीव्र शहरीकरण के कारणवश वृक्षों व वनों को अंधाधुंध भारी मात्रा में काटा जा रहा है। धारणीय विकास को वास्तविकता के धरातल पर लाने के लिए समूचे विश्व के विकसित एवं विकाशील देशों को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता हैं हाल ही में संपन्न हुए कोपेनहेगन शिखरवार्ता में उत्तरी व दक्षिणी देशों के बीच परस्पर सहयोग की कमी को अनुभव किया गया।

भूमंडलीकरण का उद्देश्य पर्यावरण को बचाने मे सहयोग करने वाले सकारात्मक संबंधों का

विकास करना होना चाहिए।

रेखा (मिरांडा हाउस) ने भी भूमंडलीकरण पर अपने विचारों को रखा उन्होंने कहा कि भूमंडलीकरण कोई नई संकल्पना नहीं है। भारत हमेशा से विश्व व्यापार समुदाय का सदस्य रहा है। अंग्रेज़ों के शासन में भी मसालों, रेशम आदि को बारूद के बदले बेचा जाता था। उस समय भूमंडलीकरण का मतलब 'एक के बदले एक' (विनिमय प्रणाली) था जिसे फ्रांस में सुरक्षा प्रणाली के चलते प्रभावित किया। फिर भी बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भूमंडलीकरण की हवाएँ फिर से चलने लगीं। भारत ने इसका स्वाद 1991 की नई अर्थव्यवस्था नीति के रूप में चखा। भूमंडलीकरण के लाभ-हानि देश के लगभग हर क्षेत्र में महसूस किया जा सकते हैं। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप विभिन्न संस्थाओं जैसे विश्व बैंक, FDI की वित्तीय सहायता से भारतीय शिक्षा तंत्र पर गहरा प्रभाव पड़ा है जिसमें शिक्षा के सार्वभौमिकरण तथा कन्या-शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है।

Sonam Grover (Aditi Mahavidhyalaya) presented a paper on Globalization and Education. According to her, governance is trying to compete in the Global markets by placing the onus of policy on education to produce the human capital which is most appealing to global competition. The question we are facing is to what extent is the educational endeavor affected by process of globalization that is threatening the autonomy of national educational systems. There have also been fundamental attacks on the liberal ideas of education, rather commercialization in the name of innovation has got boosted. Learning has increasingly been viewed as a commodity. Educational aims have been narrowed to what we can become rather what we are. These issues have to be addressed with deep critical enquiry, so as to find alternative means to improve the present educational systems.

भूमिका पाहूजा (माता सुंदरी) द्वारा की गई प्रस्तुति में उन्होंने बताया कि पूँजी तथा मानव संसाधन की गतिशीलता, यातायात और संचार की उत्कृष्ट तकनीक, विदेशी संस्कृति से ज्यादा से ज्यादा उपभोग, विभिन्न विषयों पर भूमंडलीय चेतना आदि भूमंडलीय के कुछ पहलू हैं। भूमंडलीकरण ने शिक्षा पर भी प्रभाव छोड़ा है जिसमें प्राथमिक शिक्षा और अध्यापक शिक्षण शामिल हैं। DPEP, SSA, EFA आदि जैसे कार्यक्रमों को जारी रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से वित्तीय सहायता लेनी पड़ी। 'ऑनलाइन शिक्षण' भी आजकल ज़ोरों पर है। भूमंडलीकरण के नकारात्मक पहलुओं को देखते हुए लोग इस प्रक्रिया को उलटने की बात करते हैं। उन्हें यह समझने की ज़रूरत है कि भूमंडलीकरण की लहर को वापिस लौआना असंभव है। भूमंडलीकरण के नकारात्मक पक्षों को कम करने के लिए मेहनत करने की आवश्यकता है ताकि यह सभी देशों के लिए वरदान साबित हो।

PUBLIC LECTURE ON NOVEMBER 25, 2009:
Children in areas of Civil Unrest

The session began with a welcome address by Vice Principal, Dr. Adarsh Gulati from Miranda House. Prof. Shantha Sinha, Chairperson of the National Commission for Protection of Child Rights, addressed the audience on the delicate and sensitive issue of children in the areas of civil unrest. Dr Sinha pointed out that children are the largest disadvantaged section of our country.

While sharing experiences from different places, she stressed that such children are exposed to different kinds of risk. She strongly advocated that every child must be protected and be given the right to education and proper facilities. Professor Poonam Batra from the Central Institute of Education chaired the session. Apart from Miranda House, teachers and students of department of elementary education from other colleges also attended the lecture.

Departmental Events
2009-2010

Workshops

- Workshop on *Pedagogy of Mathematics at primary level* by *Jodogyan* in August.
- An interactive session on Pedagogy of Mathematics titled “Teaching of Fractions” by Dr. Jayashree Subramanium and her team from Eklavya, Bhopal in July.
- A discussion on teaching of Social Sciences in Primary classes, by Ms. Shailja from Gargi College in July.
- A talk by Ms. Snehlata Gupta on *Teaching of Language* in August.
- A Story Telling session on '*Ways of Telling Stories*' by Dr. Ashish Ghosh in September.
- Lecture on 'Climate Change' by Dr. D. Raghunandan from Delhi Science Forum in October.

Series on Globalization, August-December.

- Introductory Session by Professor Sunanda Sen.
- Globalization and Environment by Dr. Vinod Raina.
- Globalization and Gender by Ms. Kalyani Menon.
- Globalisation and Identity by Professor Apporvanand.
- Globalization and Culture by Sh. Ravi kant.
- **Public Lecture** on '*Children in Areas of Civil Unrest'* by Professor Shantha Sinha in November.
- Play **'Gul-Gulee Circus'** organized by the Regional Resource Centre for Elementary Education (USRN-DU) and Department of Elementary Education, Miranda House in January.
- Play **'Pandita Ramabai'** organized by National School of Drama in March.

Students involved:

Ashtami, Nishu, Shivani, Purnima, Purti, Neelam, Ritu, Isha, Manju, Avi, Bhawna, Sonika

Teacher Advisors:

Dr. Mukul Kalia Tiwari, Dr. Barnali Biswas, Ms. Archana Kushwaha, Ms. Neetu Rana.